REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

''गढ़वाल हिमालय क्षेत्र मे पर्यटन उद्योग की सम्भावनाएं एवं सुझाव''

डॉ. आर.सी. भट्ट[1] , डॉ. वन्दना तिवारी[2]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर– भूगोल , राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्णप्रयाग चमोली.
[2]एसोसिएट प्रोफेसर– वाणिज्य , राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्णप्रयाग चमोली.

वर्तमान समय में पर्यटन उद्योग सम्पूर्ण विश्व में एक अत्यधिक महत्वपूर्ण उद्योग का रुप लेता जा रहा है। विश्व का प्रत्येक राष्ट्र चाहे छोटा हो या बडा विकसित हो या विकासशील, अर्न्तराष्ट्रीय–स्तर पर अधिकाधिक पर्यटकों को अपनी ओर आर्कर्षित करने के लिए प्रयासरत है। वर्तमान समय में इस उद्योग द्वारा रोजगार एवं विदेशी मुद्रा अर्जित करने में प्रमुख साधन के रुप में स्वीकार किया जाने लगा है। उत्तराखण्ड पर्यटन उद्योग से प्रतिदिन चार करोड की आमदनी प्राप्त होती है।

उत्तराखण्ड भारत का 27 वाँ राज्य है, यहाँ हिमनदियां, वर्फ से ढके पहाड, फूलों की घाटी, स्कीइंग, ढलान और घने जंगल तथा कई मंदिर व तीर्थ स्थान हैं। हिमालय में बसे चार–धाम सबसे पवित्र और श्रद्धेय हिन्दु मंदिर बद्रीनाथ, केदारनाथ गंगोत्री और यमुनोत्री है। हरिद्वार जिसका अर्थ है, भगवान का प्रवेश द्वार केवल मैदानी भाग है। यह पश्चिम में सतलज से पूर्व में काली नदी तक 300 किमी तक विस्तृत गंगा नदी प्रणाली के लिए जल आयोजित करता है। नंदा देवी (25,640 फीट) में कंचनजंगा (28160 फीट) के बाद दूसरी सबसे ऊँची चोटी है। दूनागिरी नीलकंठ, चौखम्बा पंचाचुली, त्रिसूल, 23000 फीट से ऊँपर की अन्य चोटियाँ है। इसे देवी देवताओं यक्षों किन्नरों, परियों और संतो का निवास स्थान माना जाता है। यहाँ ब्रिटिश काल में विकसित पर्यटक स्थल मसूरी, अल्मोडा, रानीखेत, और नैनीताल जैसे कुछ पुराने पहाडी सैरगाह है। इस क्षेत्र में साहसिक पर्यटन, तीर्थाटन, सांस्कृतिक एवं वन्य जीव विहार, पक्षी विहार, नेचर ऐड लैण्ड़स्केपं, स्वास्थ्य, आरोग्य एवं आध्यात्मिक, जैव व ग्रामीण पर्यटन, वाटर स्पोर्स, कूज, बौद्व, विरासत एवं रज्जू मार्ग शामिल है। उत्तराखण्ड में पर्यटन उद्योग से लाखों व्यक्तियों को प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रोजगार प्राप्त होता है। उत्तराखण्ड में सरकार द्वारा अपनी नई पर्यटन नीति की घोषणा की है। नई पर्यटन नीति के तहत पर्यटकों को उत्तराखण्ड आने के लिए आकृष्ट किया जाएगा।

नई नीति के अंतर्गत होटल, रिजार्ट, योगा, आरोग्य, स्पा आयुर्वेद तथा प्राकृतिक चिकित्सा रिजार्ट, ईको–लॉज रेस्टोरेंट, पार्किंग स्थल, मनोरंजन पार्क, कन्वेंशन केन्द्र, त्यौहार, साहसिक गतिविधियां, रोप–वे, कैरावन, एयर टैक्सी, हस्तशिल्प, जंगल सफारी, सर्विस अपार्टमेंट आदि कुल 28 पर्यटन गतिविधियों को पात्र इकाई माना है।

गढ़वाल हिमालय में पर्यटकों के आर्कषण की दृष्टि से विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण स्थान है, इन पर्वतीय क्षेत्रों में हिमालय क्षेत्र विश्व प्रसिद्व एवं आर्कषण का मुख्य केन्द्र है। पश्चिम से पूर्व तक 2500 किलोमीटर तथा उत्तर से दक्षिण तक 250 किमी0 फैला यह विशाल

क्षेत्र अपने में भारत ही नही अपितु विश्व की सर्वोत्तम प्राकृतिक सौन्दर्य को समेटे है। ऋषि– मुनियों और देवी–देवताओं की इस पावन धरती के प्राकृतिक सौन्दर्य का शब्दों में वर्णन असम्भव है। वहां जाकर ही इसकी असली सुंदरता का बोध हो सकता है।

हरिद्वार में हर की पैडी, मन्सा देवी, चण्डी देवी, कुशावर्त घाट, विल्केश्वर मन्दिर, शान्ति कुंज, देहरादून में–गुच्छुपानी, टपकेश्वर महादेव, सहस्त्रधारा, टाइगर प्रपात, कालसी, लांखामण्डल, हनोल, मसूरी आदि। उत्तरकाशी में गंगोत्री, यमनोत्री, गौमुख, हर्षिल, चमोली में बद्रीनाथ, आदि बद्री, भविष्य बद्री, वृद्व बद्री, योगघ्यान बद्री, हेमकुण्ड साहिब, माणा, नीति आदि। रुद्रप्रयाग में उखीमठ, तुगनाथ, मदमहेश्वर, गुप्तकाशी, त्रिजुगीनारायण, टिहरी में– कैम्पटी फॉल, मुनि की रेती, चंबा, धनोल्टी, बूढा केदार, पौडी में सोम का भांडा, कण्वाश्रम दुगडा, खिर्शु, लैंन्सडाउन, देवलगढ़। गढ़वाल हिमालय में पर्यटन की दृष्टि से व्यापक सम्भावनाएं मौजूद है। लेकिन दिशाहीन विकास के कारण विश्व पर्यटन मानचित्र पर यहां क्षेत्र विशेष स्थान नहीं बना पाया है। इस क्षेत्र की व्यापक एवं गम्भीर समस्याएं इसके आदर्श पर्यटन क्षेत्र में बनने में बाधक सिद्व हो रही है।

गढ़वाल हिमालय में पर्यटन की प्रमुख बाधाएँ एवं प्रभाव–

इस क्षेत्र की सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्या पर्यावरण सम्बन्धी है। इस समस्या पर विचार करने से पूर्व इससे सम्बन्धित पृष्टभूमि का अध्ययन आवश्यक है गढ़वाल हिमालय क्षेत्र में जैसे मसूरी चंबा, टिहरी, धनोल्टी, पौडी, लैंसडाउन, खिर्शु, चोपता, जोशीमठ, टिहरी आदि का विकास ब्रिटिश काल में आला–अफसरों एवं सैनिको के गर्मियों के आरामगृह के रुप में हुआ, उस समय यह कल्पना नहीं की गयी थी कि आम आदमी भी इन स्थानों तक पर्यटन का आनंद लेने पहुंचेगें। वर्तमान समय में धनी वर्ग के साथ–साथ उच्च मध्यम वर्ग भी इन पर्यटक स्थान में पहुंच रहे है। इसी के साथ पर्यावरण सम्बन्धी समस्याएं भी सामने आने लगी है। हाल ही में हीरा कारोबारी गुप्ता बन्धु ने अपने दोनो बेटों की शादी चमोली जनपद के औली जोशीमठ में सम्पन्न की है, जिससे यहां के पर्यावरण को प्लास्टिक कूडा, कचरे से काफी नुकसान हुआ है। इन क्षेत्र में बढ़ते हुए पर्यटकों की संख्या के कारण स्थानीय स्तर पर वनों का कटान, भवन निर्माण की सामग्री खनन को अत्यधिक प्रोत्साहन के कारण ही खनन कार्य से पर्यावरण के लिए गम्भीर चुनौती पैदा कर रही है, ग्रीष्मकाल में पर्यटको के अत्यधिक दबाव के कारण पर्यटक स्थलों की स्थिति अत्यधिक दयनीय हो गयी है, पर्वतीय क्षेत्र झील, तालाब, खाल, प्राकृतिक जल स्रोत सिकुडना और सूखना जल– प्रदूषण होना इसी का परिणाम है। पर्वतीय पर्यटन स्थल के स्थान पर पर्वतीय महानगर कहना उचित होगा, ग्रीष्मकाल में पर्यटकों की संख्या सर्वाधिक होती है और वाहन भी सर्वाधिक आते हैं, जिससे यहां के नदी, नाले, जल के स्रोत तीव्र गति से दूषित हो रहे हैं।

नब्बे के दशक ने तो मानों यहां के पर्यावरण को एक गम्भीर चुनौती प्रदान की है। उदारीकरण एवं निजीकरण के दौर ने नवधनाढय वर्ग को जन्म दिया। उपभोक्तावाद एवं दिखाने की संस्कृति में विश्वास करने वाले इस वर्ग ने यहां के पर्यावरण को तीव्र गति से दूषित किया। निजी वाहनों से यात्रा से जहां वायु प्रदूषण को बहुत बढावा मिला, वही सम्पूर्ण पर्वतीय क्षेत्रों में प्लास्टिक कूडे कचरे में भी बेतहाशा वृद्वि हुई, एक अनुमान के अनुसार इस क्षेत्र के पर्यावरण को विगत 10 वर्षों में जितना नुकसान हुआ है, उतना विगत 50 वर्षों में भी नहीं पहुंचा।

साहसिक पर्यटन के प्रति बढते रुझान ने कम समय में अधिकतम लाभ कमाने की प्रवृत्ति ने इस क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक मात्रा में दोहन किया है। जिससे पर्यावरण में असन्तुलन उत्पन्न हो रहा है। ऋषिकेश से व्यासी व उसके ऊपर तक गंगा नदी में रिवर राफ्टिंग को प्रोत्साहित करने के लिए बाहर से आये हुए व्यवसायियों ने स्थानीय निवासियों से सस्ती दरों पर जमीन खरीद कर गंगा के तट/मुहाने पर प्राकृतिक बनस्पति पेड–पौधों को काटकर आवासीय कॉलोनी गेस्ट हाउस, टैन्ट कालोनी, होटल आदि निर्माण कर पर्यावरण को नुकसान के साथ गंगा नदी को भी प्रदूषित किया है। जिस तरह से इस क्षेत्र में मानवीय गति–विधियों में वृद्वि हुई है, इसी क्रम में क्षेत्रीय पर्यावरण के सम्बन्ध में एक अध्ययन में स्पष्ट किया गया है। हिमालय क्षेत्र के विभिन्न ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं। इन ग्लेशियर की वर्तमान दर के अनुसार सन् 2035 तक ये ग्लेशियर समाप्त हो जायेगें। विगत 20 वर्षों में तेजी से पिघलते ग्लेशियरों ने अनेक झीलों का निर्माण किया है। अकेले सिक्किम में इस प्रकार की लगभग 60 झीलें हैं, जिससे क्षेत्र में बाढ़ का खतरा बढ़ रहा है। उत्तराखण्ड अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र (यूसैक) प्रदेश के सभी ग्लेशियर का अध्ययन हो रहा है, सभी छोटे–बडे

ग्लेशियर की सेटेलाइट इमेज के जरिये अध्ययन किया जा रहा है। ग्लेशियर में किस तरह के बदलाव मानवीय गतिविधियों के कारण हो रहे हैं, कैसे उनके क्षेत्र बढ़ रहे हैं किस क्षेत्र में ग्लेशियर घट रहे हैं, ग्लेशियर में होने वाले बदलाव का प्रकृति पर क्या असर पड रहा है। गंगोत्री ग्लेशियर, पिण्डारी ग्लेशियर, बंदरपूछ ग्लेशियर, मिलम ग्लेशियर के साथ 2013 के भीषण दैवीय आपदा के दौरान चर्चाओं में आया केदारनाथ का चौराबाडी ग्लेशियर जो कि इस क्षेत्र में मानवीय गतिविधियों एवं हैली सेवाओं के कारण इस पर प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है।

सामाजिक आर्थिक पहलू– उत्तराखण्ड गढ़वाल हिमालय में पर्यटन सम्बन्धी गतिविधियों का एक सामाजिक आर्थिक पहलू भी है। लाभ कमाने की प्रवृत्ति ने शहरी/बाहरी व्यक्ति के द्वारा अधिकतम लाभ के लिए कुछ ही समय में पर्यटन व्यवसाय पर एकाधिकार प्राप्त कर लिया, और स्थानीय निवासी जो उस आय के वास्तविक हकदार थे, आय से वंचित होते चले गए। आज पर्वतीय क्षेत्रों की 70 प्रतिशत जनसंख्या गरीबी–रेखा के नीचे जीवन–यापन कर रही है, और बाढ़ भू–स्खलन, दूषित जल, वायु प्रदूषण के रुप में बिगडते पर्यावरण की कीमत चुका रही है, इसी का परिणाम है कि स्थानीय निवासियों का पर्यटकों के प्रति नजरिया बदल रहा है, ये पर्यटकों को पर्यावरण विनाशक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं, मान्यताओं तथा मूल्यों पर हमलावार के रुप में देखने लगे हैं। स्थानीय निवासियों की यह सोच भविष्य में पर्यटन विकास के लिए प्रमुख बाधा बन सकती है। पर्यावरण के साथ ही इस क्षेत्र में पर्यटन व्यवसाय के विकास में कई अन्य समस्यायें भी है। संचार के साधनों का केवल शहरी क्षेत्रों तक विकसित होना सूदूरवर्ती क्षेत्रों में संचार के साधनों का बेहतर ना होना, आज भी बडी समस्या है।

- यातायात मार्गो में सडकों की दयनीय दशा जो हमेशा स्थानीय एवं पर्यटकों के लिए जोखिम भरी रहती है। आल वेदर रोड निर्माण के कारण पहाडी क्षेत्रों में भूस्खलन से सडक मार्गो की दुर्दशा हो रही है,
- तीर्थ स्थलों एवं पर्यटक स्थलों पर पर्यटकों का ठगा जाना मनमाने किराया एवं मूल्य लिये जाने इसका उदाहरण केदारनाथ हैली सेवा के लिए सरकार द्वारा किराया दर निश्चित किये जाने के बाद भी हैली सेवा प्रबन्धक–घोडे–खच्चर वालों द्वारा मनमाना किराया लिया जाना पर्यटन के लिए उचित नहीं है।
- यात्रा मार्गो पर अनुभवी गाईड का ना होना जिससे पर्यटकों को सही जानकारी प्राप्त नहीं हो पाती है थोडा बहुत जानकारी स्थानीय लोगों से पर्यटकों द्वारा प्राप्त की जाती है। पर्यटकों की सही जानकारी प्राप्त नहीं हो पा रही है।
  साहसिक पर्यटन हेतु जानकारी के अभाव में पर्यटक दूरस्त क्षेत्रों या नवीन क्षेत्रों में नहीं जा पाते जिससे वे क्षेत्र स्थानीय लोगों के लिए आय का स्रोत नहीं बन पा रहे हैं।

उत्तराखण्ड गढ़वाल हिमालय में पर्यटन के विकास हेतु सुझावः–

- क्षेत्रीय समस्याओं के समाधान में सर्वप्रथम हमें इस विषय पर विचार करना होगा पर्यटन के विकास के लिए अधिक से अधिक सुविधा पर्यटकों को मिले, पर्यटन के लाभ की योजना दीर्घकालीन हो ना कि अल्पकालीन, पर्यटक योजना एवं स्थानीय स्तर पर बेरोजगारों को प्रोत्साहित किया जाय, क्योंकि अल्पकालीन हितों में बनी योजना से पर्यावरण को नुकसान के साथ स्थानीय संस्कृति, रीति–रिवाज को भी नुकसान होता है, हम ऐसे पर्यटकों को आर्कर्षित करने का प्रयास करें जो पहाड़ी संस्कृति यहां के पर्यावरण, रीति–रिवाज, मान्यताओं आदि का उचित सम्मान करने की भावना रखते हैं। महज संख्या वृद्वि हमारा लक्ष्य नहीं होना चाहिए।
- आज भी गढ़वाल हिमालय के क्षेत्र में वही स्थान प्रमुख पर्यटक स्थल है, जिनका विकास ब्रिटिश काल में हुआ था, आजादी के 70 वर्ष बाद भी हम विपुल सम्भावनओं के बावजूद यहां के अधिकांश पर्यटकों को अपनी ओर आर्कर्षित करने में उतने अधिक सक्षम नहीं है, तथा पर्यटकों को कुछ नया देने में भी असमर्थ हैं।
- गढ़वाल हिमालय में साहसिक पर्यटन की बहुत अधिक सम्भावनायें हैं, उन क्षेत्रों की खोज कर पर्यटकों के सामने लायें जायें, जिनमें अच्छे होटल, रिजार्ट, योगा, आरोग्य, स्पाआयुर्वेद तथा प्राकृतिक चिकित्सा रिजॉर्ट, इको–लॉज, रेस्टोरेन्ट, पार्किंग स्थल, मंनोरजंन पार्क, कन्वेंशन केन्द्र साहसिक गतिविधियां, रोप–वे, कैरावन,

एयर टैक्सी, हस्तशिल्प, जंगल सफारी, सर्विस अपार्टमेंट, टैकिंग, रिवर राफ्टिंग, ग्लाइडिंग पर्वतारोहण, स्कीइंग आदि की क्षमता रखने वाले क्षेत्रों की पहचान कर उन्हें विकसित किया जा सकता है। जिससे देशी–विदेशी पर्यटकों को अधिक से अधिक संख्या में आर्कर्षित किया जा सकता है।

उत्तराखण्ड में केन्द्र सरकार द्वारा चार धाम सड़क परियोजना (आल वेदर रोड) का निर्माण किया जा रहा है, जिसके लिए पेड़ का कटान पहाडों को तोड़ने के लिए भारी विस्फोट का प्रयोग किया जा रहा है इस दृष्टि से पर्यावरण असन्तुलन एवं भूस्खलन अधिक हो रहा है, इसमें आम जनता की भागीदारी से सघन वृक्षारोपण कर पर्यावरण में सन्तुलन बनाया जा सकता है।

पर्यटन का लाभ स्थानीय लोगों को प्राप्त हो और पर्यटन स्थानीय विकास का सशक्त माध्यम बन सके इसके लिए सरकार द्वारा शिक्षण एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम बनाये जाय, जिससे स्थानीय जनता प्रशिक्षित होकर पर्यटक सुविधा का प्रयोग कर स्वरोजगार प्राप्त कर सके, जून 2013 के दैवीय आपदा के बाद से जो यहां का पर्यटन व्यवसाय चौपट हो गया था, उसके विकास के लिए दीर्घकालीन योजना बनाकर, पर्यटकों के लिए सुरक्षित आवासगृह, पर्यटक पुलिस, पर्यटक सहायता केन्द्रों का सभी पर्यटक स्थलों में निर्माण हो, तथा जो जून 2013 आपदा का डर जख्म पर्यटकों के मानस पटल पर है उसके लिए सुरक्षित पर्यटन एवं यात्रा की व्यवस्था सरकार एवं प्रशासन करे। सुरक्षित यात्रा का संदेश पर्यटकों/सैलानियों के बीच जा सके।

निष्कर्ष रुप में कह सकते हैं कि यह सबसे महत्वपूर्ण समय है कि हम गढ़वाल हिमालय नये पर्यटक स्थलों को पहचाने जो पर्यटकों की दृष्टि में ओझल हैं, ऐसे क्षेत्रों का पर्यटन की दृष्टि से समुचित तरीके से विकसित करने का प्रयास किया जाय, ताकि आने वाले समय में यहां के बेरोजगार युवाओं को इस क्षेत्र से पलायन ना करना पडे। आर्थिक विकास एवं रोजगार का प्रमुख हथियार बन सकें। यहां की कल–कल ध्वनि करती सदानीरा नदियां, शीतल वातावरण मन्त्रमुगध कर देने वाली प्राकृतिक सुन्दरता, ऊँची–ऊँची पर्वत श्रृंखलाएं, मखमली बुग्याल स्वेत, ग्लेशियर यहां की विशिष्ट संस्कृति रीति–रिवाज, खान–पान, वेशभूषा, तीज त्यौहार लम्बे समय तक देशी–विदेशी पर्यटकों को अपनी ओर आर्कर्षित करती रहे। ऐसा विकास इस क्षेत्र में हो, जो राज्य में बेरोजगारें को रोजगार और सरकार के लिए आय का साधन बन सके। इसके अतिरिक्त पर्यटक स्थलों का समुचित विकास भी राज्य सरकार द्वारा किया जाना चाहिए, जो यहां के बेरोजगारो को अधिक से अधिक रोजगार एवं आर्थिक सामाजिक विकास का आधार बन सके।

सन्दर्भ–

1– गढ़वाल का इतिहास, प0 हरिकृष्ण रतूडी, भागीरथी प्रकाशन गृह पृ0सं0 01,21,41।

2– उत्तराखण्ड के लोकोत्सव एवं पर्वोत्सव, प्रो0 डी0डी0 शर्मा अंकित प्रकाशन हल्द्वानी।

3– उत्तराखण्ड का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक भूगोल, डा0 शिव प्रसाद नैथानी मोहन नैथानी, पवेती प्रकाशन श्रीनगर गढवाल पृ0 55।

4– पंचबद्री, पंचकेदार, पंचप्रयाग, डा0 धन सिंह रावत।

5– उत्तराखण्ड सरकार नई पर्यटन नीति– प्रतीक सैनी 28 सितम्बर 2018 पत्रिका

6– उत्तराखण्ड में पर्यटन उद्योग का दर्जा– हिन्दुस्तान दैनिक समाचार पत्र देहरादून–17 मई 2018

7– उत्तराखण्ड पर्यटन उद्योग को नुकसान, महेश पांडे देहरादून बेब दुनिया, हिन्दी समाचार पत्र

8– उत्तराखण्ड के प्रमख पर्यटन स्थल

9– उत्तराखण्ड के प्रमख पर्यटन व धार्मिक स्थल www.smeducatiom.com